तपस्या वर्ष

नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा – 1

01.01.2015

1. **स्वमान** – मैं बाप समान संतुष्टमणि हूँ।
   - संतुष्टता की शक्ति सबसे महान है इसलिए इसमें सर्व प्राप्तियाँ हैं।
   - संतुष्टता की शक्ति में सब शक्तियाँ समायी हुई हैं।
   - संतुष्टमणि आत्माएँ माया से कभी हार नहीं खातीं, माया हार खाती है।
   - संतुष्टमणियाँ माया व प्रकृति के हलचल को ऐसे अनुभव करती हैं जैसे कार्टून शो देख रहे हों।

2. **योगाभ्यास** –

अ. बापदादा की हजारों भुजायें मेरे सिर के ऊपर हैं....मैं उनकी छत्रछाया में बेहद संतुष्ट और आनंदित हूँ....प्यारे बापदादा के कमल हस्तों से सर्व खजाने, सर्व वरदान, गुण व शक्तियाँ निकलकर मुझमें समा रहे हैं....जिससे मैं भरपूर, संतुष्ट और तृप्त होता जा रहा हूँ....।

ब. **अशरीरी बनने की ड्रिल** – `बापदादा सभी के लिए कहते हैं कि बीच-बीच में समय निकालकर एकदम अशरीरी बनने की ड्रिल जरुर करना है क्योंकि आने वाले समय में सेकण्ड में अशरीरी बनना ही पड़ेगा।`

3. **धारणा – संतुष्टता**

शिव भगवानुवाच – `बापदादा का विशेष वरदान है संतुष्टता के शक्ति (सम्पन्न) भव। कुछ भी हो जाए अपनी संतुष्टता को कभी नहीं छोड़ना। कोई कुछ भी करता है, दिल में नहीं रखो। दिल में बात को नहीं बाप को रखो। सदा ऐसी आत्मा के प्रति शुभभावना, शुभकामना रखकर अपनी शुभकामना को कर्म में लगाओ।`

4. **चिंतन** –
   - संतुष्टता की आवश्यकता एवं महत्ता ?
   - कौन-कौन सी बातें हमें असंतुष्ट करती हैं ?
   - सदा संतुष्टमणि कैसे बनें ?
   - संतुष्टता के लिए बाबा के महावाक्य ?

5. **साधकों प्रति** – प्रिय साधकों ! क्या हम स्वयं को संतुष्टता की शक्ति में सम्पन्न समझते हैं ? हम स्वयं से पूछें कि क्या मैं संतुष्टमणि हूँ? इस पर अधिकांशतः हमारा जवाब होता है कि हम कभी-कभी तो संतुष्ट रहते हैं, सदा नहीं। परंतु बापदादा को `कभी-कभी` शब्द अच्छा नहीं लगता। वे कहते हैं कि क्या ब्रह्मा बाबा ने कभी `कभी-कभी` शब्द कहा ? जब उन्होंने नहीं कहा तो तुम्हें भी तो फॉलो फादर करना है ना !! बाप से प्यार है तो प्यार में इस `कभी-कभी` शब्द को न्यौछावर करो और तीव्र पुरुषार्थ करते हुए अपने सम्पन्नता और सम्पूर्णता की ओर आगे बढ़ो।